Conference of the Vice-Chancellors of Various Universities of the Western Zone on the theme of ***"Incubating and Implementing Innovation in Education: Issues and Approaches"*** at Gandhinagar.
(27th November, 2017)

- वास्तव में, आनेवाले दो दिनों में आज और कल आप जो गहरी चर्चा करने वाले है उसकी नींव भारतीय संघ के अध्यक्ष प्रो. पी. बी. शर्माजी ने अपने वक्तव्य में रख दी है। हमारे देश को आजाद हुये 7 दशक हो गए है। इन वर्षों में यह अपेक्षा थी कि देश के सामने जो समस्याएं है उनका समाधान होगा और विकासशील देशों की केटेगरी से बहार निकलकर हमारा देश विकसित देशों की केटेगरी में आ जायेगा। जब हम छोटे थे तो हम सुनते थे कि दुनिया के देश अविकसित, विकासशील और विकसित देशों की केटेगरी में आते है और हमारा देश विकासशील देश है। विकासशील देश से हम विकसित देश कैसे बनें और इसमें उच्च शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है, यह सभी कुलपतियों के लिए और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े हुये सभी लोगों के लिये विचार करने का विषय है।
- जब हम विकासशील अवस्था से विकसित अवस्था की बात करते है तो हमारे सामने प्रश्न उठता है कि विकास की हमारी परिकल्पना क्या है ? इसकी परिकल्पना का कोई भारतीय मॉडेल हो सकता है, या हमारे लिये वही मॉडेल है जो पश्चिम के देशोने हमारे सामने तैयार करके रखा है ? हमारे विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में इस बात पर विचार होना चाहिये कि देश की परिस्थितियों और समस्याओं को देखते हुये हम कैसा विकास चाहते हैं। क्या विकास का मॉडेल हम बाहर से लोगों से लेंगे या इसके लिए कोई हमारा भारतीय मॉडेल भी हो सकता है, जो देश की स्थितियों और परिस्थितियों से सुसंगत हो, इस विषय पर हमारे विश्वविद्यालयों को विचार मंथन करने की जरूरत है।

- विश्वविद्यालय ऐसे संस्थान है जहां विचारों का उद्भव होता है। हमारे विश्वविद्यालयों में उद्भव होनेवाले विचार देश और समाज की प्रवर्तमान चुनौतियों का हल ढूँढने में प्रासंगिक है कि नहीं, यह प्रश्न सामने आता है। जब उच्च शिक्षा की प्रासंगिकता की बात उठती है तब उच्च शिक्षा में परिवर्तन का मुद्दा भी आता है। यह परिवर्तन कैसा होगा, किस प्रकार से होगा ये सब विचार के मुद्दे हैं। यह खुशी की बात है कि भारतीय विश्वविद्यालय संघ तथा इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एज्यूकेशन के संयुक्त तत्वावधान में कुलपतियों की वेस्टर्न झोन की यह बैठक आयोजित हुई है जहां आप सभी विदवतजन उपस्थित हैं, ऐसे अवसर पर आपके बीच में आकर मुझे खुशी हो रही है।
- दो दिन की इस बैठक में शिक्षा में नये विचारों का पोषण करने तथा उनको लागू करने में आनेवाली समस्याओं और उनके उपायों पर आप गहन विचार विमर्श करेंगे। हम सभी भलीभांति जानते है कि किसी भी राष्ट्र या समाज की आधारशिला रखने में महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक की होती है। शिक्षक ही वास्तव में समाज और राष्ट्र का निर्माता है। शिक्षा का उद्देश्य आनेवाली पीढ़ी को ज्ञान अर्जन करके जीवन के मूल्यों की समझ देना है जिससे हमारी नई पीढ़ी ज्ञान के आधार पर समाज और राष्ट्र को नई दिशा प्रदान कर सके और विश्व के मानचित्र पर अपने देश की एक खास पहचान बना सके।
- भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा की एक परंपरा रही है जिसे गुरुकुल परंपरा कहा जा सकता है। क्या यह परंपरा आज सम्पूर्णत: नष्ट हो चुकी है ? क्या आज 21वीं सदी में उन गुरूकुल परम्पराओं में कुछ ऐसे तत्व खोजे जा सकते है जिनकी आज भी प्रासंगिकता बनी हुई है ? भारत की गुरूकुल व्यवस्था में विद्यार्थी और गुरू साथ-साथ रहते थे। उनकी दिनचर्या में कई प्रवृत्तियों का समावेश होता था - जैसे कि सफाई करना, घास काटना, श्रमदान करना, पशुओं की देखभाल करना और साथ-साथ में पढ़ाई भी करना। छात्रों की अभिरूचि को ध्यान में रखते हुये उन्हें तमाम काम सिखाये जाते थे तथा साथ-साथ में भिन्न-भिन्न विषयों का ज्ञान भी दिया जाता था। छात्रों को आश्रम में काम के बदले में समाज की तरफ से खाने-पीने का सामान भी मिलता था जिससे गुरुकुल चला करते थें।

छात्रों की internship भी हो जाती थी तथा गुरुकुल से निकलते ही उन्हें काम मिल जाता था। दूसरों शब्द में कहे तो placement की भी व्यवस्था थी। पढ़ने और पढ़ाने की यह व्यवस्था अद्वितीय थी। एक शृंखला की तरह एक गुरू अपने जीवनकाल में सैंकड़ों शिष्यों को तथा वे शिष्य अन्य सैंकड़ों शिष्यों को ज्ञान देते थे। इसी तरह ज्ञान, नैतिक मूल्य, धर्म इत्यादि की जानकारी समाज के हर तबके तक पहुँचती थी और समाज भी मजबुती से बंधा रहता था।

- गुरुकुल शिक्षा पद्धति में कौन से तत्व ऐसे है जो आज भी हमारी चुनौतियों का हल करने में उपयोगी है इस पर आज विचार करने की जरूरत है। हमारी परंपराओं के जो सार्थक पहलू है, उन्हें आत्मसात करके हमें आगे बढ़ना होगा। हमारे यहाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में बड़े-बड़े संस्थान थे। हमारी तक्षशिला यूनिवर्सिटी में जिसे विश्व की पहली अन्तर्राष्ट्रीय यूनिवर्सिटी कहा जा सकती है, वहाँ ई.स. 700 वर्ष पूर्व दुनियाभर के छात्र पढ़ने के लिए आते थे । इस विश्वविद्यालय में एंजिनियरिंग, मेडिसिन्स, फिलोसोफी इत्यादि विषयों का ज्ञान दिया जाता था । संस्कृत के बहुत बड़े-बड़े विद्वान जैसी की पाणिनी, कौटिल्य, चरक, चन्द्रगुप्त मौर्य इत्यादि प्रसिद्ध व्यक्ति तक्षशिला के विद्यार्थी रहे हैं । अभी भारतीय शिक्षक संघ के अध्यक्ष महोदयने वैश्विकरण का जिक्र किया। हमारे देश में पूरे विश्व को एक कुटुंब के रूप में देखने पर जोर दिया गया था। यह मेरा है, यह पराया है, ये सब तो छोटी दृष्टि वाले लोगों की सोच है। सही सोच वाले तो यही सोचते है कि पूरा विश्व एक कुटुंब है। इसलिये ही हमारे यहाँ कहा गया है "वसुधैव कुटुंबकम"। तो यह विचार तो हमने ही पूरे विश्व के सामने सर्व प्रथम रखा था। वैश्विकरण का विचार या भाव हमारे भारतीय समाज में प्राचीनकाल से अविरत चला आ रहा है। वैश्विकरण का प्रभाव भारतीय जन मानस तथा उसकी सामाजिक और शैक्षिक व्यवस्था पर रहा है। आज के समय में मानव की आवश्यकता में निरंतर वृद्धि हो रही है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये नये-नये उपायों की आवश्यकता दिखाई देती है। मुझे इस बात की खुशी है कि गुजरात में

इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एज्यूकेशन शिक्षको के लिये नये-नये प्रयोग कर रहा है और सफलता के आयामों को छू रहा है।

- हमारी टीचर्स यूनिवर्सिटी ने कौशल विकास के अभ्यासक्रम द्वारा कक्षा के बाहर पढ़ाना, घुड़सवारी, खेलकूद पर विशेष ध्यान, नाट्य शास्त्र, विदेशों में नौकरी इत्यादि क्षेत्रों में कई नवीन आविष्कार किये है। इन सभी प्रयोगों के कारण इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एज्यूकेशन के विद्यार्थिओं में सुनहरे भविष्य की आशा बढ़ी है। यहाँ का employability Index 10% से बढ़कर 57% जा पहुंचा है। इस यूनिवर्सिटी के 10 विद्यार्थियों को कुवैत में शिक्षक के पद पर नियुक्ति मिली है। नये-नये विचारों और आचारों के माध्यम से सफलता प्राप्त करने के संनिष्ठ प्रयासों के लिये मैं कुलपति महोदय और उनकी टीम को बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी इसी प्रकार से यह विश्वविद्यालय अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये समर्पित भाव से कार्यरत रहेगा तथा अपने अस्तित्व को सार्थक बनायेगा।
- परिवर्तन की प्रक्रिया सतत चालू रहती है मगर इस प्रक्रिया की गति कभी धीमी होती है तो कभी तेज़ होती है। आज जिस दौर से हम गुजर रहे है इस दौर में परिवर्तन की गति काफी तेज़ हो गई है। टेक्नॉलॉजी से यह संभव हो पाया है। एक समय था जब हम औद्योगिक क्रांति की बात करते थे। अब हम प्रौद्योगिक की क्रांति यानि कि टेक्नॉलॉजी की क्रांति के दौर से गुजर रहे है। टेक्नॉलॉजी ने हमारे सामने कई नई चुनौतियाँ भी पेश की है तो दूसरी और चुनौतियों के हल भी पेश किये है। आवश्यकता इस बात की है हमारे विश्वविद्यालय तथा हमारी उच्च कक्षा की संस्थाएं टेक्नॉलॉजी के विकास के कारण पैदा हुई परिस्थितियों को समझें तथा टेक्नॉलॉजी से पैदा हुई समस्याओं के समाधान को भी खोजने का प्रयास करें। इनोवेशन की बात आती है। हमारे बीच प्रो. अनिल गुप्ता बैठे हैं। एक सर्जनात्मक मानस जमीनी स्तर पर कैसे नई-नई बातें ढूंढ सकता है, इस बात को आज स्वीकृति मिल रही है। हमारे और हमारे बच्चों की सोच में भी बहुत बड़ा अंतर आ गया है। पहले हम घर में बैठे-

बैठे अपने छोटे से विश्व में घूमा करते थे। आज हमारे बच्चे कम्प्यूटर, गूगल और वोट्सप के सहारे पूरे विश्व के साथ जुड़े रहते है। पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी के बीच बहुत ही तेजी से टेक्नॉलॉजी के कारण आज परिवर्तन हो रहे हैं। पहले की आपकी बहुत सी नौकरियाँ, कई काम धंधे आज अप्रस्तुत हो चुके हैं और उनके स्थान पर नई-नई नौकरियाँ अस्तित्व में आ रही है। हमारे विश्वविद्यालयों को हमारे युवाओं को नई नौकरियों के लिये तैयार करना होगा। हमारे कुलपतियों और विश्वविद्यालयों का यह काम है कि शिक्षा में तथा उसके स्वरूप में ऐसा परिवर्तन लायें जिससे हमारे विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करनेवाले युवा बदलती हुई परिस्थितियों में रोजगार पा सकें तथा समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें।

- हम लोग आज अक्सर जनरेशन गेप की बात करते है। यह जनरेशन गेप कोई नई चीज नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि पहले ये नहीं था और अब आया है। आखिर तो दादा की पीढ़ी और पोते की पीढ़ी में अंतर आ ही जाता है। लेकिन अब यह जनरेशन गेप पहले के जनरेशन गेप की तुलना में काफी बढ़ गया है। जनरेशन गेप से सोच बदलती है, दृष्टिकोण बदलते है, चुनौतियों का स्वरूप बदलता है, नौकरियों के स्वरूप बदलते है। ऐसी परिस्थिति में उच्च शिक्षा के स्वरूप को कैसे बदला जाये और जनरेशन गेप के अनुरूप अपने विश्वविद्यालयों में शिक्षा को मौजूदा चुनौतियों के संदर्भ में कैसे ढाला जाये, इसके बारे में आपको विचार करना होगा।
- 1996 और 2009 की बीच पैदा हुये बच्चों को गूगल जनरेशन के नाम से जाना जाता था। 2010 के बाद पैदा हुये बच्चों को वोट्सप जनरेशन कह सकते है। अब आज जो नई जनरेशन आई है उसकी क्या जरूरतें हैं, उसका मानसिक गठन कैसा है, इसके सामने विश्व की कल्पना क्या है, विश्व की परिकल्पना क्या है इनके सामने चुनौतियाँ कैसी हैं, ग्लोबलाईजेशन के बदलते हुये स्वरूप के साथ यह कैसे अपने को एड्जस्ट करें ये सारे सवाल हैं और इन सवालों के उत्तर हमें हमारी उच्च शिक्षा

व्यवस्था में खोजने होंगे। क्या ऐसा परिवर्तन लाने के लिये हमारे विश्वविद्यालय तैयार है या नहीं, इसका विचार करने की आज जरूरत है।

- हमारे प्रधानमंत्रीजीने एक नये भारत की बात कही है। क्या हम अपने विश्वविद्यालयों में हमारे विद्यार्थियों के सामने नये भारत की कल्पना रखते है कि नहीं रखते हैं, यह बड़ा प्रश्न है। उनके सामने हमारे प्रधानमंत्रीजी के नये भारत के विझन को रखने की जरूरत है। उनके विझन के मुताबिक नया भारत बनाने के लिये हमें जिस प्रकार की युवापीढ़ी की आवश्यकता है उस प्रकार की नई पीढ़ी का निर्माण क्या आज हो रहा है ? यह खुशी की बात है कि भारत में जिसे हम डेमोग्राफिक डिविडण्ड कहते है, वह है हमारे युवा विकसित भारत को लाने के लिये समर्थ है की नहीं इसके बारे में भी हमें सोचना है।
- हमारे सामने एक चुनौती और है। अब हम अलग-अलग नहीं रह सकते। आज हम ग्लोबलाईजड विश्व का हिस्सा हैं। ग्लोबलाईजड विश्व के सामने जो चुनौतियाँ हैं उन चुनौतियों को हमारी युवापीढ़ी हल करने में सक्षम है की नहीं इसके बारे में भी हमें विचार करना होगा।
- दूसरा विषय है हमें हमारे देश को विकासशील अवस्था से विकसित देश की अवस्था में लाना है। इसके लिये हमें विद्यार्थियों को कैसी शिक्षा देनी चाहिये और उसके लिये हमारी मौजूदा शिक्षा पद्धति यदि सही नहीं है तो उसको कैसे रिस्ट्रक्चर किया जाये इस बात पर कुलपतियों को विचार करना चाहिये।
- तीसरी महत्व की बात विकास की है। विकास की एक परिभाषा सार्वभौमिक कल्पना हो सकती है और भारत के लिये विकास के मायने कुछ और भी हो सकते है। हमारी परिस्थितियाँ अलग है। हमारी आबादी बहुत ज्यादा है। देश में बेरोजगारी है। हमारे गाँव पिछड़े हुये है। हमारी अर्थव्यवस्था ग्राम केन्द्रित है। ऐसी स्थिति में हमारे विश्वविद्यालयों को युवाओं को साथ में रखकर विचार करने की आवश्यकता है।

- आज मुझे बहुत खुशी है की वेस्टर्न झोन के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की यह कोन्फरन्स हमारे देश की मौजूदा समस्याओं को अच्छी तरह से समझने की कोशिश करेगी तथा युवापीढ़ी को कैसे तैयार किया जाये इसके बारे में गहनता से विचार होगा। आपके बीच में प्रो. अनिल गुप्ता जैसे कर्मठ व्यक्ति है, जो वास्तव में नवी पीढ़ी को तैयार करने के काम में समर्पितरूप से काम कर रहे है, उनके भी विचार आप सुनेंगे।
- अंत में, इस कोन्फ़रन्स की सफलता के लिये में अपनी शुभकामनाएं देता हूँ और यह कोन्फ़रन्स अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सफल रहे, ऐसी में कामना करता हूँ।

जय हिन्द।